भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १८-२४ जुलाई २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

जुलाई -16	वास्तविक वर्षा (मिमी)									IMD संभावित वर्षा (मिमी)					सलाह
Date	7-13 जुलाई	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	
पंजाब															पंजाब में फसल 60 से 80 दिनों के मध्य वानस्पतिक तथा पुष्पन की प्रारम्भिक अवस्थाओं में है| खरपतवार नियंत्रण के लिए अंत:शस्य क्रियाएँ की गई हैं| कपास पर सफेद मक्खी की औसत संख्या/पत्ती मचकी में 3.8, किंगरा में 3.7, खारा में 12.26, चेना में 3.4, कोठे चांदसिंह में 1.9, सेडासिंहवाला में 10.7, अजीत गिल में 3.7 तथा बाजखाना गांव में 6.6 दर्ज की गई| जैसिड की संख्या सभी स्थलों पर 3-5/पत्ती के मध्य पाई गई| कपास तथा खरपतवार में सफेद मक्खी के प्रकोप के लिए खेतों की नियमित निगरानी रखें| फसल की निराई समय पर करें| बेंगन, टमाटर, भिंडी, मूंग, मेश, तथा ग्वार जैसी एकान्तर पोषक फसलों में भी सफेद मक्खी का आक्रमण देखा हया है| इन फसलों पर समय पर कीट प्रबंधन करने के लिए नियमित निगरानी आवश्यक है| जैसिड का प्रबंधन थायमेथोक्जाम 25 डब्लूजी@ 40 ग्रा/एकड़ तथा फ्लोनीकेमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्रा/एकड़ की दर से छिड़काव करे	सिंचाई के बाद यूरिया की आधी मात्रा अर्थात बीटी संकरों के लिए 65 किग्रा. तथा बीटी रहित संकरों के लिए 30 से 35 किग्रा. का
भटिंडा	38	0	0	0	4.6	0	16	3	0	3	0	0	11	3	
फिरोजपुर	6.2	0.7	0	0	0	0	18	4	0	0	0	0	11	6	
मुकतसर	31.2	0	0	0	0	0	0	47	0	3	0	0	7	6	
मानसा	30.4	0	0	0	0	16	34	7.6	0	5	0	0	4	12	
हरियाणा															
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0.8	1	0	4	0	0	0	14	
हिसार	2.9	0	0	0	6.4	9.1	11	11	12	0	0	0	3	38	
फ़तेहाबाद	11	0	0	0	1	20	5	4.7	3.3	3	0	0	5	23	
राजस्थान															
हनुमानगढ़	5.7	0	0	0	2.9	4.4	2.3	0.6	10	1	2	1	1	3	
श्रीगंगानगर	2.3	0	0.1	0	0.9	1	0.3	0	0.4	1	2	1	1	3	
बांसवाड़ा	154	45	73	4.9	0.6	8	2.6	1.3	12	1	1	2	2	2	

	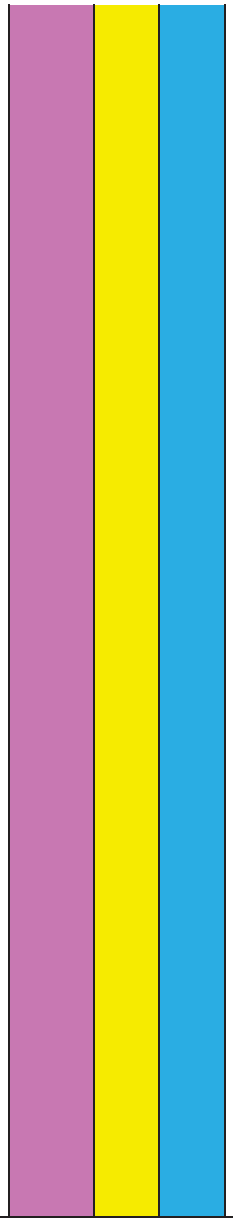				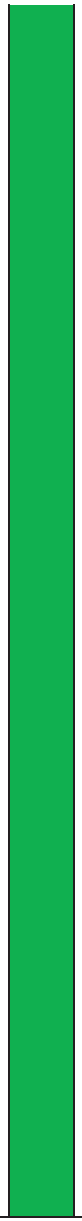		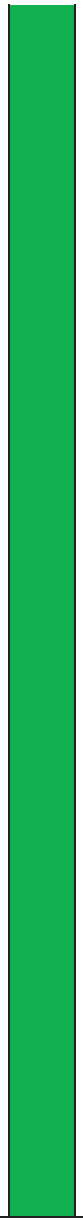						अनुप्रयोग करें| सिरसा में फसल 60 से 70 दिनों की है जो वानस्पतिक और लघु कली से पुष्पन अवस्था के मध्य है| निराई-गुड़ाई तथा ट्रैक्टर से अंत:शस्य क्रियाएँ जारी है| खेतों की मेढों तथा आस-पास के क्षेत्र में खरपतवारों की मौजूदगी देखी गई है| इस सप्ताह में सफेद मक्खी की संख्या में कमी रिकार्ड की गई है| सफेद मक्खी की संख्या आरसीएच-650बीजी II में 7 से 17 प्रति 3 पत्तियाँ(औसत 11.3/3 पत्तियाँ), एचएस-6 पर 10 से 20 के मध्य (औसत संख्या 15.2/3 पत्तियाँ);गंगानगर अगेती में 8 से 16 के मध्य (औसत संख्या 11.4/3 पत्तियाँ) तथा आरएस-2013 में 7 से 14 के मध्य(औसत संख्या 11.2/3 पत्तियाँ) दर्ज की गई है| सिरसा में किसानों के कुछ खेतों में सफेद मक्खी की संख्या 1 से 12/3 पत्तियाँ दर्ज की गई| किसानों के खेतों में कुछ स्थलों में जड़-सड़न तथा तना आधार पर काला रोग होने की समस्या दर्ज की गई| किसानों के खेतों में पत्ता मरोडिया रोग भी देखा गया है| किसान भाई नाशीकीटों संख्या वृद्धि के बारे में नियमित रूप से फसल की निगरानी करते रहें| संतरा वर्गीय बगीचों के आस-पास के कपास के खेतों में कड़ी निगरानी रखें| नीम आधारित कीटनाशक+निरमा पाउडर का अनुप्रयोग उन खेत विशेषों में करने की सलाह दी जाती है जिनमे हानिकारक कीट की संख्या आर्थिक हानि सीमा के नजदीक है| पहली सिंचाई के बाद खेत से खरपतवारों को निकाल दें तथा खेत में तथा आस-पास के क्षेत्र को स्वच्छ बनाए रखें| किसानों को नत्रयुक्त उर्वरकों का उचित अनुप्रयोग करने की सलाह दी जा रही है| इसके साथ ही फसल के प्रारंभिक पुष्पन अवस्था में आने पर पोटेशियम नाइट्रेट(13 :0:45) का @ 2.0 किग्रा./एकड़ 100

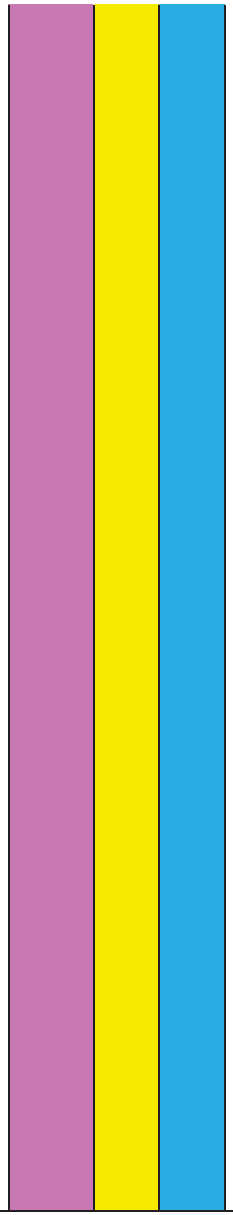

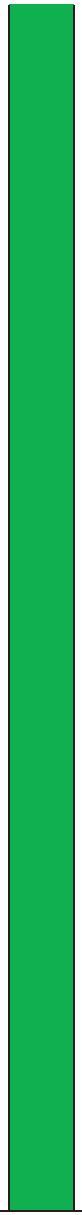

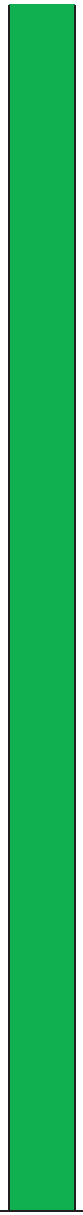

															लीटर पानी में लेकर अनुप्रयोग करें| हरियाणा के दूसरे स्थानों में फसल सामान्य है तथा वानस्पतिक अवस्था में है| गुड़ाई का कार्य किया गया है| खरपतवार नहीं पाई गई| कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करते समय पत्तियों की निचली सतह पर भी कीटनाशक पहुँचने से हानिकारक कीटों की संख्या का प्रभावी नियंत्रण होता है| जैसिड प्रकोप से फसल ग्रसित होने पर इमीडेक्लोप्रिड 17.8एसएल 40 मिली. अथवा थायोमेथोक्जाम 25डब्लूजी 40 ग्रा. प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें| सफ़ेद मक्खी की जनसँख्या ज्यादा (6-8 वयस्क / पत्ता से ज्यादा) पर पहला छिड़काव निंबीसिडिन/अचूक @1.0 ली./एकड़ की दर से करें| देसी कपास में धब्बदारे इल्ली (सूँडी) के प्रबंधन के लिए 600 क्वीनालफॉस 25इसी अथवा प्रोफेनोफॉस 50ईसी 600 मिली. अथवा स्पीनोसेड़ 45एससी की 75 मिली. मात्रा प्रति एकड़ 200 ली. पानी में डालकर इस्तेमाल करें| जड़ गलन के प्रांरभिक लक्षण दीखाई देते ही संक्रमित पौधों और इनके एक मीटर की परिधि में इनके तने के आधार क्षेत्र को कार्बेंडेजिम औषधि @ 0.2% पानी में घोल बनाकर तर करें| पत्तियों के रोगों के नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोमायसिन सल्फेट(6 से 8 ग्रा.) के साथ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड(600-800 ग्रा.प्रति एकड़ 200 से 250 लीटर पानी में घोल कर 3 से 4 बार 15 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव करें| किसानों को सलाह दी जाती है कि नाशीकीटों तथा रोगों के लिए अपनी फसल की नियमित निगरानी करते रहें| श्रीगंगानगर में फसल वानस्पतिक व कली निर्माण अवस्था में है| समय पर बुआई की गई फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम है|

															फूलकीट (थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप निम्न से मध्यम स्तर पर है| फसल पर नीमतेल आधारित कीटनाशकों के छिड़काव की सिफ़ारिश की जाती है| सफेद मक्खी की संख्या अधिक होने पर येलो स्टिकी ट्रैप का अनुप्रयोग 5 से 10 ट्रेप प्रति एकड़ की दर से इन्हें पकड़ने के लिए करें| सिरसा के आस-पास के क्षेत्रों के किसानों से अनुरोध है कि सीआईसीआर क्षेत्रीय केन्द्र, सिरसा के फार्म पर निरीक्षण-दौरा करके सफेद मक्खी के प्रबंधन में उपयोगी चूषक ट्रेपों के प्रचालन की विधी को सीख लें| अगेती तथा समय पर बुआई की गई फसल में वर्तमान सफेद मक्खी की संख्या और ग्रसन स्तर से विशेषरूप से एक-एक कर वर्षा होने और तापमान में आई गिरावट के कारण हानि होने की संभावना नहीं है|
उड़ीसा															कपास की बुआई शीघ्रातिशीघ्र पूरा करें| जमीन की अंतिम तैयारी के समय गोबर की खाद @5टन/हे. की दर से खेत में डालने की किसानों को सलाह दी जाती है| मृदा परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों की आधार मात्रा का प्रयोग करें| उर्वरकों की सिफारिश, संकरों के लिए: 120:60:60 किग्रा. नत्र: फॉस्फोरस:पोटाश/हे. तथा उन्नत किस्मों के लिए 90:45:45 किग्रा नत्र:फॉस्फोरस:पोटाश/हे. **आधार मात्रा:** सम्पूर्ण फॉस्फोरस +50%पोटाश+25%नत्र; **पौधों की दूरी**-सामान्य बुआई के लिए 90X60 सेमी. तथा सघन रोपण पद्धति के लिए 60X10 सेमी है| हरी खाद के लिए सनई बीज की बुआई 25 किग्रा./हे. की दर से कपास बुआई के एक दिन पश्चात करें और बुआई के 25 से 30 दिनों पश्चात इसे कपास के कतारों के मध्य ही मृदा में मिला दें| बुआई से पहले कपास बीज को *एजोटोबेक्टर* तथा पीएसबी (स्फुरद विलेयक जीवाणु) से @25 ग्रा. प्रत्येक
कोरापुट	99	6.8	2.3	0	4.5	10	0	2	0.6	26	33	25	16	14	
कालाहांडी	128	1.4	0	3.6	0	46	1.9	25	5.1	22	29	34	15	5	
बोलांगीर	64.8	1.4	0	1	0	14	11	17	0	9	40	20	13	0	

गुजरात														
अमरेली	3.9	0	1.1	1	4.6	0.2	3	0.7	5.3	24	10	10	14	24
भावनगर	3	0.4	2.7	4.9	0.5	0.6	4	0.3	4	20	20	10	10	14
जामनगर	10.6	0.5	9.1	22	5.5	0.7	6.6	6.1	6.9	20	20	10	13	14
राजकोट	14.3	1.3	13	2.4	2.6	0.3	2.9	4.3	4	23	20	10	13	13
भरूच	16.7	2.4	10	2.5	0	1.1	5.7	7.1	9	23	25	24	39	36
सबरकांठा	100	18	71	18	2.1	3.1	3.7	4.6	5.5	14	10	10	14	20
सुरेन्द्रनगर	17.5	2	16	2.1	0.5	0.7	2.9	0.4	0.5	23	10	10	13	25
अहमदाबाद	29.4	9.1	20	5.8	13	4.2	12	3.4	3.6	23	20	20	23	15
वडोदरा	55.5	24	22	1.9	0.2	0.9	2	0.7	9.4	28	22	18	39	21
पाटन	68.7	33	36	8.4	2.1	7.4	1.7	0	1	10	10	10	10	10
मेहसाना	81	25	56	1.8	7	3.5	3.2	6.2	1.8	10	10	10	10	25

प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें| कपास में अरहर की अंत:फसल 8:2 कतार अनुपात में लगाएं| अरंडी, गेंदा तथा मक्का जैसी फांस फसल कपास के चारों ओर लगाएँ| खरपतवार प्रबंधन के लिए पेंडीमेथेलिन 1.0 किग्रा/हे. की दर से अंकुरण-पूर्व छिड़काव के रूप में बुआई के एक दिन बाद अनुप्रयोग करें|

गुजरात के मुख्य कपास उत्पादक क्षेत्रों में सामान्य से 30 से 70% कम वर्षा हुई है। रिपोर्ट के अनुसार 30% से भी कम क्षेत्रफल में बुआई समय पर हुई है। जुलाई 11 से पहले लगभग 13.65 लाख हेक्टर क्षेत्रों में बुआई तथा 15 जुलाई से पहले 17.7 हेक्टर में बुआई हुई। विगत 3 वर्षों में गुजरात में प्रत्येक वर्ष 28-29 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में कपास की बुआई हुई। जुलाई 15 के बाद बोई गई फसल में गूलर की गुलाबी सूँड़ी की समस्या का सामना करना पड़ेगा। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे इस सप्ताह के बाद कपास की बुआई न करें। अगेती तथा समय पर बोई गई अल्पकालीन फसल नाशीकीटों की समस्या से बच जाती है और महत्वपूर्ण पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में मृदा नमी भी ले पाती है। इसके फलस्वरूप कम आदानों के साथ उपज अधिक मिलती है। पछेती बोई गई फसल में गुलाबी सूँड़ी का प्रबंधन की आवश्यकता पड़ती है। जूनागड में फसल 21 दिनों की है। अंत:शस्य क्रियाए तथा निराई के कार्य किए गए है। जैसिड की संख्या आर्थिक हानिस्तर से कम (1.0/3 पत्तियाँ/ पौधा) पाई गई। सूरत में फसल पौध अवस्था में है। खेतों में रिक्त स्थानों की पूर्ति की जा चुकी है। मानसून-पूर्व की फसल पुष्पन अवस्था में है और इस में गुलाबी सूँड़ी का प्रकोप पाया गया

है। इसमें फीरोमोन ट्रेप का प्रयोग करके इस सूँडी की निगरानी करें। ऐसे खेतों में गुलाबवत फूलों को हाथ से चुनकर नष्ट कर दें।

मध्यप्रदेश														
खरगोन	148	34	47	5.3	0.2	1.8	0	3.5	9.7	0	3	8	18	18
धार	114	29	27	1.8	0.9	0.7	0.6	0	13	8	5	3	0	0
खंडवा	260	57	48	7	0	0	0.3	5.8	2	0	15	12	8	29

खण्डवा में फसल 40 दिनों की वानस्पतिक अवस्था में है। खरपतवारों का प्रकोप देखा जा रहा है। जिसके नियंत्रण के लिए सिफारिश किए गए उपाय किए गए है। जैसिड का ग्रसन आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया है। रोगों का प्रकोप नहीं है।

महाराष्ट्र														
धुले	77.1	13	2	0.2	0.3	0.2	0	0.2	5.6	8	80	99	16	18
नांदूरबार	114		8.6	6.3	1.3	0.4	2.7	1.6	7.3	16	91	88	28	33
जलगांव	133	44	4.9	1.2	4.2	1.9	0.1	2.2	16	9	91	89	12	18
अहमदनगर	52.4		2.5	1.5	0.6	0	0	0	0.8	20	95	72	70	25
औरंगाबाद	112	21	1.9	0.4	0	0	0	0.2	3.9	12	90	90	9	9
जालना	115	35	2.5	0	0	0.2	0	0	1.5	0	43	44	7	4
बीड़	24.2	3.7	1.8	1.1	0.9	0	0	0	10	0	45	44	3	7
नांदेड़	171	87	6.5	1.3	0	0	1.7	6	1.5	3	75	81	4	11
परभणी	108	53	1.6	0	0	0	0	5	1.6	0	74	85	6	8
हिंगोली	120		1.3	0	0	0	0.3	5.5	0	0	74	73	4	6
बुलढाना	159	79	6.3	0	0.1	0.1	0.5	2.4	8.2	3	5	3	6	2
अकोला	201	91	9.9	1.7	3.1	0.9	3.1	1.1	7.4	2	4	4	3	1
वासिम	128	63	3.2	1.1	1	0.4	2.3	11	6.5	1	2	4	3	1
अमरावती	196	37	20	0.3	0.1	2.6	1.8	2	10	4	4	10	4	1
यवतमाल	190	51	11	0.3	0.1	1.9	8	17	3.3	1	2	6	4	2

महाराष्ट्र में अभी तक अच्छी वर्षा हो चुकी है| खरीफ मौसम के दौरान भी राज्य में अच्छी वर्षा होने का पूर्वानुमान है| पोषकतत्व प्रबंधन तथा नाशीकीट प्रबंधन यदि बेहतर ढंग से किया गया तो महाराष्ट्र में इस वर्ष कपास की फसल अच्छी रहेगी| अच्छे परिणामों के लिए बुआई के साथ अथवा 3 सप्ताह के अंदर ही फॉस्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्र की एक तिहाई मात्रा का अनुप्रयोग करें| इसके बाद शेष यूरिया की खण्डित मात्रा 20 से 25 दिनों के अन्तराल में पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में अनुप्रयोग करें| उर्वरक अनुप्रयोग के समय मृदा मे नमी रहना आवश्यक है| यद्यपि मराठवाड़ा में 17 से 20 जून के मध्य वर्षा हो गई थी, लेकिन मानसून का आगमन 23 जून को हुआ| अगले 20 दिनों के लिए वर्षा का वितरण समान रहा| जून 26 से पहले बुआई की गई फसल लाभान्वित होगी| जून 25 से पहले, हालांकि , कपास की बुआई केवल 2.35 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में ही हो पाई थी| महाराष्ट्र में कपास की बुआई अभी तक 33 से 35 लाख हेक्टर में पूरी हो चुकी है| जुलाई 2 तक 15 लाख हेक्टर

वर्धा	197	15	33	0	0	0.1	8.3	6	12	2	2	8	4	2
नागपुर	109	4.9	12	0.2	0.1	0.8	3.3	17	20	3	3	10	7	4
चंद्रपुर	328	96	11	0.5	0.3	3.2	2.2	16	3.4	2	4	22	7	7

में बुआई हुई तथा 9 जुलाई तक 27 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में कपास की बुआई हुई| पूरे फसलकाल में सम्पूर्ण प्रदेश में अच्छी वर्षा होने की भविष्यवाणी की गई है तथा इससे अच्छी उपज प्राप्त होने का भी अनुमान है| जुलाई 15 के बाद बुआई की गई फसल की वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी जिस कारण कम से मध्यम उपज प्राप्त होगी| पछेती बुआई की गई फसल तथा बीजीII संकर भी गुलाबी सूँडी से प्रकोपग्रस्त होंगे| अत: किसानों को सलाह दी जाती है कि इसके बाद कपास की बुआई राज्य में न करें| जुलाई 14 के बाद राज्य में वर्षा शांत हो जाएगी| निराई-गुड़ाई का कार्य तेज गति से चल रहा है| जून में बुआई की गई फसल में यदि नत्र-स्फुरद-पोटाश उर्वरक आधार मात्रा के रूप में दिए गए है तो यूरिया की मात्रा एक बैग प्रति हेक्टर से अधिक जुलाई के अंतिम सप्ताह में, न दें| अमरावती डिविजन के प्रत्येक पांचों जिलों में वर्षा 16 जुलाई तक 280 से 380 मिमी. तक हो चुकी है| सम्पूर्ण वाशिम जिले में वर्षा के असमान वितरण के कारण बुआई का कार्य देरी से हुआ| अच्छी वर्षा जुलाई के सिर्फ दूसरे सप्ताह में हुई| जुलाई के पहले सप्ताह में अकोला तथा बुलढाणा जिलों में बुआई का कार्य तीव्र गति से हुआ| जुलाई 16 तक बुलढाणा जिले में बुआई कार्य 1.2 लाख हेक्टर में तथा अकोला में 1.0 लाख हेक्टर में पूरा हो चूका है | अमरावती जिले में बुआई 1.7 लाख हेक्टर क्षेत्र में हुई है तथा यवतमाल जिले में 3.5 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में हुई है| इस वर्ष बीड जिले में बुआई समय पर हुई जिसमें बुआई का 90% कार्य जुलाई के पहले सप्ताह में सम्पन्न हुआ| इस प्रकार जिले में अभी तक केवल 96 मिमी. वर्षा 16 जुलाई तक हुई है| वर्षा का वितरण

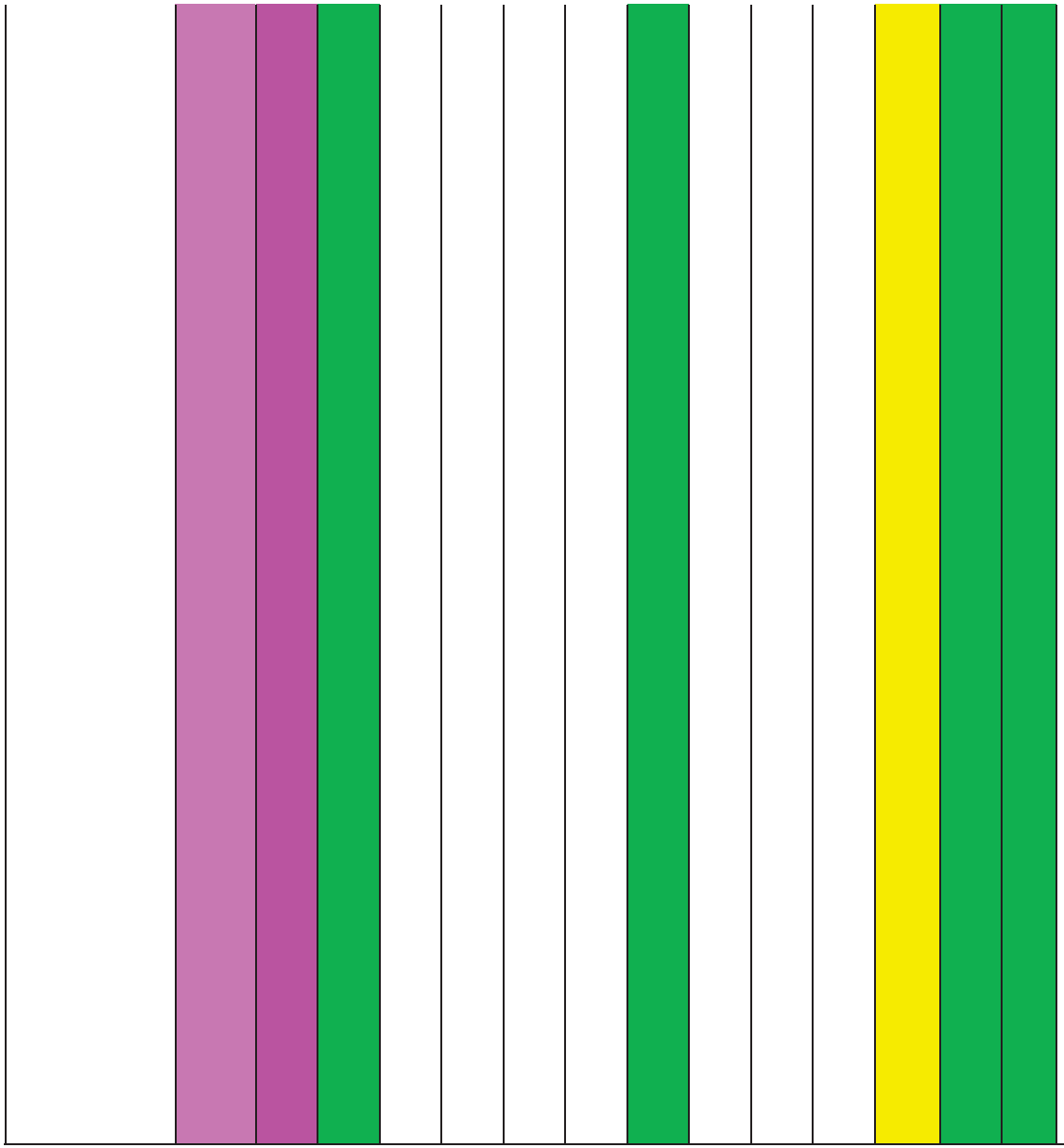

असमान रहा है लेकिन बीड, जालना और औरंगाबाद जिलों में अगस्त के दूसरे सप्ताह में अच्छी वर्षा होने का अनुमान है| अभी हाल ही में जालना और औरंगाबाद जिलों में अच्छी वर्षा हुई है| कुल वर्षा जालना में 218 मिमी. तथा औरंगाबाद जिले में 255 मिमी. प्राप्त हुई| दोनों जिलों में बुआई का कार्य पूरा हो चुका है| जुलाई के दूसरे सप्ताह में इस डिविजन में लगभग 1.0 से 1.5 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में बुआई कार्य पूरा हुआ| 16 जुलाई तक 378 मिमी. वर्षा के साथ नांदेड़ जिले में समान वितरण के साथ अच्छी वर्षा हुई है| परभणी जिले में अभी तक 300 मिमी. वर्षा हुई है| नांदेड़ में कपास बुआई का कार्य समय पर लगभग पूरा हो चुका है| हालांकि, अधिकृत रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि लातूर डिविजन में बचे हुए 4.0 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में से 50 से 60% बुआई कार्य पूरा हो गया है| धुले तथा जलगाव जिलों में जून के अंतिम सप्ताह में वर्षा का आगमन हुआ| जलगाव में 239 मिमी. तथा धुले में 165मिमी. वर्षा दर्ज हुई| धुले जिले में बुआई कार्य जुलाई के दूसरे सप्ताह तक लगभग समाप्त हो चुका है| अहमदनगर जिले में बुआई कार्य धीमा चला| पछेती बुआई की गई फसल में जैसिड का प्रकोप विशेषत: संवेदनशील बीटी संकरों में होने की संभावना है|नंदुरबार जिले के 50% से भी अधिक क्षेत्रफल में बुआई देरी से हुई है| अगस्त में पुष्पन अवस्था में गूलर की गुलाबी सूँडी की समस्या रहने की संभवाना है जो अक्टूबर नवंबर में यह समस्या गंभीर बन जाएगी| अगस्त में तथा बाद के महीनों के लिए भी सावधानी के तौर पर गुलाबी सूँडी के लिए फिरोमोन(कामगंध) ट्रेप इस कीट की निगरानी के लिए खेतों मे लगा दें| यूरिया, इमिडाक्लोप्रिड, थायोमेथोक्जाम

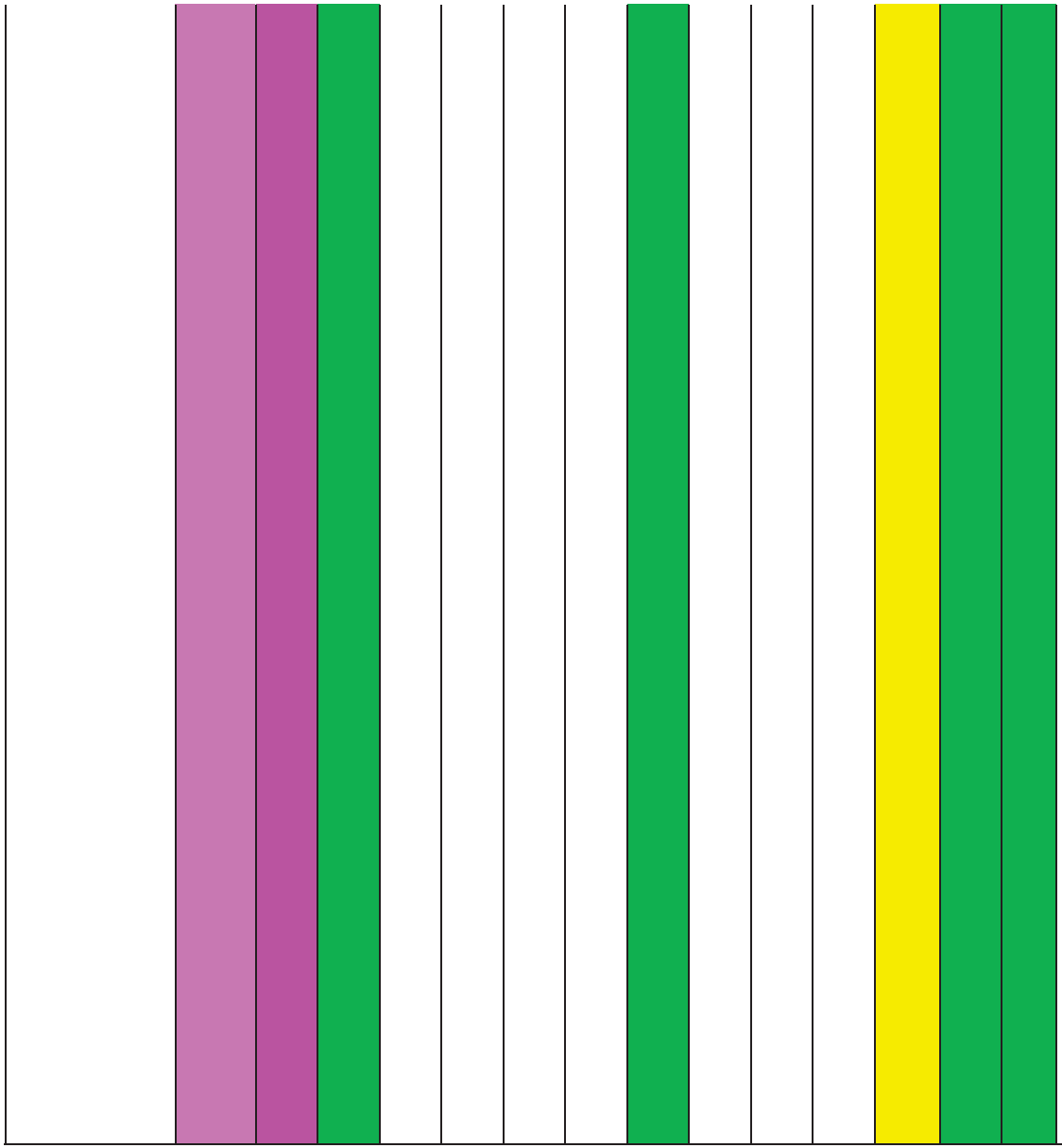

अथवा मोनोक्रोटोफॉस के अधिक इस्तेमाल से हर हालत में बचें| इससे एकरूप पुष्पन तथा गूलर निर्माण होगा| इन कीटनाशकों के प्रति जैसिड में प्रतिरोधकता का विकास हो चुका है| प्रारंभिक कली अवस्था में इन कीटनाशकों के अनुप्रयोग से लाभदायक कीटों के मरने से न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान होगा बल्कि फसल की परिपक्वता अवधि में भी देरी हो जाएगी| जुलाई 16 तक नागपुर जिले में 321 मिमी., चंद्रपुर जिले में 625मिमी. तथा वर्धा में 443 मिमी. वर्षा रिकार्ड की गई| शुष्क बुआई के अंतर्गत जून के दूसरे तथा तीसरे सप्ताह में बोई गई फसल बहुत स्वस्थ रहेगी| यद्यपि, नागपुर डिविजन में 25 जून तक 43,167 हेक्टर क्षेत्र में ही बुआई हो पाई थी|जुलाई 2 से पहले2.06 लाख हेक्टर क्षेत्र में बोई गई फसल अच्छी रहेगी| जुलाई 2 के बाद 3.1 लाख हेक्टर क्षेत्र में बोई गई फसल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी| इस क्षेत्रफल का अधिकांश क्षेत्र नागपुर जिले के अंतर्गत है| जहाँ कपास का क्षेत्र सामान्य से दो गुणा बढ़ गया है| जुलाई 8 से 13 के मध्य भारी वर्षा हुई| निराई-गुड़ाई करने के बाद यूरिया के अनुप्रयोग से वानस्पतिक वृद्धि में तेजी आएगी विशेषत: जून में बोई गई फसल में| यूरिया के अधिक मात्रा में अनुप्रयोग से जैसिड का प्रकोप बढ़ेगा| राज्य के किसी भी हिस्से से किसी भी नाशीकीट अथवा रोग के प्रकोप की रिपोर्ट नहीं है| किसी भी रासायनिक कीटनाशक के प्रयोग की आवश्यकता नही है| संवेदनशील बीटी संकरों में जैसिड की उपस्थिती हो सकती है विषेशरूप से जिनमें अधिक यूरिया का प्रयोग किया गया है| नीमतेल @10 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव 5 ग्रा. डिटर्जेंट

															साबुन चूर्ण के साथ किया जा सकता है| जलमग्न क्षेत्रों में मुरझान की समस्या हो सकती है| मुरझान की प्रारंभिक अवस्था में कार्बेडेजिम 50डब्लूपी @50ग्रा. (प्रति 100 ली. पानी प्रति एकड़) के घोल से मृदा को तर किया जा सकता है| इसके बाद 10 लीटर पानी में 200 ग्रा-यूरिया का घोल का छिड़काव करें|
तेलंगाना															महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में वर्षा का वितरण असंतोषजनक तथा असमान है| बाकी जिलों में वर्षा पर्यापत रूप से हुई है| वारंगल, खम्म्म, महबूबनगर, तथा नालगोंडा जिलों में नमी संरक्षण उपाय करने की सिफारिश की जाती है| राज्य के किसी भी हिस्से से हानिकारक कीट एवं रोगों के प्रकोप की कोई रिपोर्ट नहीं है| इस समय कीटनाशकों के प्रयोग की कहीं भी आवश्यकता नहीं है| अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशक के रूप में पेंडीमेथेलिन की सिफारिश की गई मात्रा के प्रयोग की सिफारिश की जाती है|
आदिलाबाद	187	58	3.1	1.1	0.1	2.4	0.3	0	6.5	4	7	13	70	51	
वारंगल	55.2	5.6	4.3	0.1	0	16	0.4	0.2	19	16	14	5	42	36	
खम्मन	41.7	4	5.9	1.9	0	7.7	0	2.3	15	12	8	3	5	21	
कारिंगर	126	27	12	1.9	0.3	2.8	0	0	2.3	9	26	2	96	11	
नालगोंडा	6.7	0	1.1	0	0	0	0	1.7	23	10	15	30	4	54	
महबूबनगर	20.5	1.8	1.1	0	0	0	0	0.3	12	4	15	128	36	11	
आंध्रप्रदेश															प्रदेश के कुछ हिस्सों में कपास की बुआई का कार्य चल रहा
गुन्टूर	4.9	0	0	0	0.8	0.2	0	7.7	28	14	6	10	9	14	

प्रकासम	5.7	0.5	0.4	0	0	0	1.4	9.3	8.5	2	16	29	7	3
कर्नाटक														
धारवाड़	37.8	6.4	1.8	1	0.5	8.4	0	1.5	1.3	3	4	7	3	6
हवेरी	10.2	1.3	0.6	1.7	0.7	0	0	0	0.3	3	7	3	4	8

है| कपास के किसानों द्वारा बीज तथा अन्य आदानों की खरीदी की जा रही है| प्रकाशम जिले में ग्रीष्मकाल में बोई गई कपास वानस्पतिक अवस्था से लेकर गूलर प्रस्फुटन अवस्थाओं के मध्य है| पहली कपास चुनाई कार्य चल रहा है| बिल के साथ विश्वसनीय बीज ही खरीदें| कुछ स्थानों पर जमीन की तैयारी भी चल रही है| अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशक के रूप में पेंडीमेथेलिन की सिफारिश मात्रा के साथ इन क्षेत्रों में प्रयोग करने की सिफारिश की जाती है| पर्याप्त नमी के उपलब्धता होने पर बुआई कार्य किया जाएगा|

लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में बीटी कपास की बुआई का कार्य लगभग पूरा हो चुका है| इस सप्ताह बादलों के मौसम तथा सतत वर्षा होते रहने की स्थिति के कारण कपास

मैसूर	18	0.7	1.2	1.2	1.4	12	0	4.7	3.1	3	4	4	3	5	की बुआई तथा पौद अवस्था की फसल को मदद मिली है| अगेती बोई गई फसल 30 से 40 दिनों की वानस्पतिक अवस्था में है| जुलाई के अन्त तक बीटी कपास की बुआई जारी रह सकती है| पौध विरलीकरण, अंत:शस्य क्रियाएँ, हस्त निराई तथा उर्वरकों की आधार मात्रा के अनुप्रयोग के कार्य अगेती बोई फसल में पूरे हो चुके है| सतत वर्षा होने वाले भागों में खरपतवारों का भारी प्रकोप देखा जा रहा है| यूएएस, धारवाड़ तथा यूएएस, रायचूर की निम्न सिफारिशों को अपनाएँ: 1) खरपतवारों के भारी प्रकोप होने की स्थिति में तथा मजदूरों की अनुपलब्धता की स्थिति में क्वीजोलफोप ईथाइल @1.0 मिली/लीटर पानी तथा पायरीथायोबैक सोडियम @ 0.8 मिली/ली. पानी की दर से अंकुरण पश्चात अनुप्रयोग के रूप में एक बीजपत्री तथा द्विबीजपत्री खरपतवारों के नियंत्रण के लिए प्रयोग करें| 2) हावेरी तथा धारवाड़ जिलों के कुछ भागों में रसचूषक कीटों तथा प्ररोह-घुन का प्रकोप रिपोर्ट किया गया है| प्ररोह-घुन के प्रबंधन के लिए प्रोफेनोफॉस @2 मिली/ली. पानी का छिड़काव तथा कपास के पौधों के ऊपरी भाग पर शरण लिए हुए वयस्क घुन कीट को हाथ से प्रात:काल चुनकर नष्ट करने की सिफारिश की जाती है| 3) कुछ क्षेत्रों में फूलकीट(थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप देखा गया है| इनके प्रबंधन के लिए किसान भाइयों को फिप्रोनिल@1.0मिली./1.0 ली पानी का छिड़काव करें| 4) तीस से चालीस दिनों की फसल में 25 किग्रा. प्रत्येक डीएपी तथा यूरिया, तथा 15 किग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ के स्थानिक अनुप्रयोग की सिफारिश की जाती है| अनुप्रयुक्त किए गए उर्वरकों के बेहतर उपयोग के लिए पौधों पर मिट्टी भी चढ़ा दें| रायचूर में

															बोई गई फसल 15 से 20 दिनों की है| कुछ क्षेत्रों में खरपतवार का प्रकोप दिखाई दे रहा है| पेंडीमेथेलिन@3.33 ली/हे. की दर से फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों के नियंत्रण के लिए प्रयोग करें| गूलर की गुलाबी सूँडी के प्रभाव वाले विगत वर्ष के क्षेत्र विशेष में फीरोमोन ट्रेप का सिफारिश के अनुसार प्रयोग कर के निगरानी करते रहें| फसल पर रोगों का प्रकोप दर्ज नही किया गया है|
तमिलनाडू															राज्य के कुछ भागों में कपास बुआई का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है, फसल अंकुरण अवस्था में है| हल्की वर्षा के पूर्वानुमान के साथ शेष भागों में कपास बुआई का कार्य जारी रखा जा सकता है| खेत तैयारी के लिए जुताई का कार्य किया गया है|
पेरंबलुर	0	0	0	0	0	9.3	2.3	4.5	0	2	2	0	2	2	
सलेम	2.8	0	0	0	0.1	7.5	2.6	3.5	8.1	3	5	0	0.5	4	
त्रिची	0	0	0	0	0	23	9.8	12	0	2	2	0	0.5	4	
विरडुनगर	0.2	0	0	0	0	0.2	0.9	16	0.8	0.5	0.5	0	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: **डॉ. उल्हास नंदनकर,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)